प्रथम मिलन में समर्पण

● ब्रह्माकुमारी विजय, सिद्धपुर (गुजरात)

मेरा लौकिक जन्म जयपुर में एक धार्मिक कुटुंब में हुआ। लौकिक दादा जी बहुत ही भक्ति भाव वाले थे। मेरे में भी उन्होंने भक्ति करने के संस्कार डाले थे। स्कूल में जाने से पहले भगवान को माथा टेककर ही जाना होता था। सन् 1964 में दादा जी को ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का परिचय मिला और साप्ताहिक कोर्स करने के बाद नियमित ज्ञान का अभ्यास करने लगे। उन्हें नियमित बाहर जाते देख एक दिन मैंने प्रश्न किया कि आप शाम को रोज़ कहाँ जाते हैं, मुझे भी अपने साथ ले चलिए। उन्होंने कहा, मैं सत्संग में जाता हूँ, आप अभी छोटी हैं इसलिए पढ़ने में अपना मन लगाइये।

बाबा मिलन के अनुभव सुन मैं तड़प उठी

एक दिन मैं हठ करके उनके साथ चल दी। सेवाकेन्द्र पर पांव रखते ही वहां का वातावरण मन को छू गया। योग चल रहा था, लाल प्रकाश से कमरा प्रकाशित था, निमित्त बहन योग करा रही थी। मन में ऐसी भावना जागी कि यहां तो रोज़ आना चाहिए। फिर नियमित जाने लगी। थोड़ा परिचय मिला कि ये शिवबाबा हैं, ये ब्रह्माबाबा हैं और बाबा के महावाक्य सुनने लगी। कुछ महीनों बाद दादी जी तथा दादा जी मधुबन (पाण्डव भवन) में साकार बाबा से मिलने के लिए गये। वहां से आने के बाद जब उन्होंने बाबा से मिलने के अनुभव सुनाये तो मैं तड़प उठी कि मुझे भी बाबा से मिलना है। मैंने बाबा को पत्र लिखा और मन की लगन प्रगट की। बाबा ने जवाब में लिखा, बच्ची, जब चाहो तब आ सकती हो। दृढ़ संकल्प रंग लाया और सन् 1968 में स्कूल की परीक्षा देकर दादाजी के साथ मधुबन पहुँच गई।

मन ने कहा, बाबा से दूर नहीं जाना

पाण्डव भवन में शाम को बाबा से मिलना हुआ। जैसे ही बाबा को देखा, मैं बाबा की गोदी में चली गई। ऐसा लगा कि मेरी जन्म-जन्म की प्यास बुझ गई है। मन यही कह रहा था कि अब बाबा से दूर नहीं जाना है। फिर बाबा ने अपने हाथों से टोली खिलाई और कहा, बच्ची, कल आपसे बाबा फिर मिलेंगे। बाबा के ये महावाक्य सुन मन खुशी से झूम उठा कि कल बाबा से व्यक्तिगत मुलाकात होगी।

सेवाकेन्द्र पर रहने का पक्का प्रोग्राम बना दिया

दूसरे दिन मैं तथा दादा जी बाबा को झोंपड़ी में मिले। जिसका इन्तजार था वो सम्मुख मिलने की घड़ी आ गई। मैं बाबा के सामने बैठी तथा दादा जी बाजू में बैठे। पहले तो बाबा ने मुझे शक्तिशाली दृष्टि दी, फिर पूछा,

बच्ची, अभी क्या कर रही हो? मैंने कहा, अभी स्कूल की परीक्षा देकर आपसे मिलने के लिए आई हूँ। बाबा ने पूछा, यहाँ से जाकर फिर क्या करोगी? मैंने कहा, बाबा, अभी तो पढ़ाई पढ़नी है। यह सुनकर बाबा गंभीर हो गये और मुझे दृष्टि देने लगे। मुझे लगा मानो मेरी तकदीर पढ़ रहे हों और कुछ ही समय के बाद बोले, बच्ची, अभी पढ़ाई नहीं पढ़नी है। यह महावाक्य सुनकर मैं भी थोड़ी गंभीर हो गई और बारी-बारी से बाबा को और दादा को देखती रही। मन में संकल्प आया कि बाबा की आज्ञा है तो मुझे उसका पालन करना ही है। फिर मैंने मन का भाव प्रकट कर दिया, बाबा, आपकी आज्ञा है तो मैं नहीं पढ़ूंगी और ईश्वरीय सेवा करूंगी। फिर बाबा ने दूसरा प्रश्न पूछा, बच्ची, शादी तो नहीं करनी है? मैंने कहा, नहीं बाबा, मैं तो आपकी ही हूँ और आपकी ही रहूँगी। मेरा उत्तर

सुनकर बाबा ने दादा जी से कहा कि मैं बच्ची को अमृतसर ट्रेनिंग में भेजूँगा, आप लौकिक घर जाना। बच्ची अब लौकिक घर से कुछ नहीं लेगी। बच्ची की पालना अब यज्ञ से होगी। तभी बाबा को दूसरा विचार आया, बोले, अच्छा, बच्ची को मैं कलकत्ता भेजता हूँ, वहाँ ट्रेनिंग लेगी। इस पर दादा ने कहा, बाबा, इनके लौकिक पिता तो अहमदाबाद में रहते हैं। आप इन्हें इतनी दूर भेजेंगे तो वे मुझसे नाराज़ हो जायेंगे। अगर आप बच्ची को अहमदाबाद भेजेंगे तो ज्यादा अच्छा रहेगा। बाबा ने कहा, हाँ, बच्ची अहमदाबाद भी जा सकती है। बाबा चिट्ठी लिखकर देता है। इस प्रकार मेरा सेवाकेन्द्र पर रहने का पक्का प्रोग्राम बाबा ने बनाया और फिर दृष्टि देकर मुझे अपनी गोद में समा लिया। मैं ज्यों ही बाबा की गोद में गई, महसूस हुआ कि बाबा ने दैहिक बन्धनों से मुझे मुक्त कर हलका कर दिया। भगवान ने स्वयं मेरी तकदीर पढ़कर मेरा भाग्य ऊँचा बना दिया। बस मेरी तो खुशी का पारावार न रहा।

बाबा की परीक्षा में पास हो गई

मेरे समान उम्र की बहुत कन्याएँ उस समय आई हुई थीं। मैंने सबको बताया कि बाबा ने मुझे सेवाकेन्द्र पर जाने की छूट्टी दे दी है। वे सभी कहने लगीं कि हम तो कब से बाबा को कह रहे हैं कि हमें सेवाकेन्द्र पर भेजो, तो भी बाबा अभी हाँ नहीं कर रहे, आप बहुत भाग्यशाली हो जो बाबा ने आपको सेवाकेन्द्र पर जाने की आज्ञा दे दी। फिर तो बाबा की मुरली सुनते, मिलन मनाते सेवाकेन्द्र पर जाने का दिन आ गया। सेवाकेन्द्र पर जाने से पहले बाबा ने सौग़ात लेने के लिए बुलाया। बाबा ने मेरे लिए तीन कश्मीरी भरत की ड्रेस रखीं और कहा, बच्ची, इनमें से दो ड्रेस पसंद कर लो। मैंने कहा, बाबा, आप तो मुझे सेवाकेन्द्र पर भेज रहे हो, अब तो मैं आपकी बच्ची पक्की ब्रह्माकुमारी बनी हूँ, आप मेरी परीक्षा ले रहे हो? अब मुझे ये रंगीन ड्रेस नहीं पहननी हैं। मुझे अपने हाथों से ब्रह्माकुमारी की ड्रेस दीजिए। तब बाबा ने कहा, बच्ची, बाबा आपकी परीक्षा ले रहे थे कि अभी भी मन रंगीन कपड़ों में तो नहीं है। आप पास हो गई। बाबा ने ब्रह्माकुमारी जीवन की भी दो ड्रेस तैयार रखी थीं, मुझे अपने हाथों से वो दीं और अलौकिक जीवन का ठप्पा लगा दिया।

मेरा दृढ़ निश्चय देख माता-पिता लौट गए

अगला दिन बाबा से विदाई लेने का दिन था। बाबा को छोड़ने का दिल नहीं होता था। बाबा से गले मिलकर आँखों से अश्रुधारा बह चली। बाबा ने प्यार भरी दृष्टि देते हुए कहा, बच्ची, बाबा आपको सेवा पर भेज रहा है, आपको बाबा का नाम बाला करना है। मैं बाबा की याद और प्यार को दिल में भरकर अहमदाबाद पालड़ी

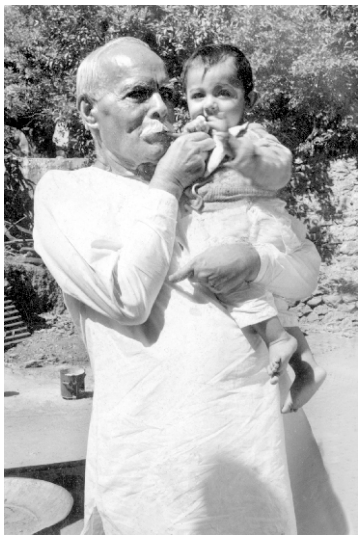

सेवाकेन्द्र पर आ पहुँची। सेवाकेन्द्र पर ऐसा लगा मानो मैं अपने घर में आ गई हूँ। माता-पिता को समाचार मिला तो वे मेरे से मिलने के लिए सेवाकेन्द्र पर आये। थोड़ी देर बातचीत करने के बाद कहा, चलो हमारे साथ घर। मैंने कहा, अब तो मैं यहां पर ही रहूंगी। दादा जी ने बताया कि बच्ची ने खुशी से ये जीवन बनाने का संकल्प किया है। माता-पिता मेरा दृढ़ निश्चय देख घर लौट गये पर कहके गये कि घर पर मिलने आते रहना।

लोगों के ताने

बाबा ने घर पर मिलने जाने की छुट्टी दे दी थी। मैं ब्रह्माकुमारी ड्रेस में ही घर पर मिलने जाती थी। आस-पास के लोग मुझे देखकर माता-पिता को कहते, आपको शादी का खर्च नहीं करना था, दहेज नहीं देना था इसलिए इसको संन्यासी बना दिया। लौकिक माता ने कहा, तुमने तो जीवन बना

लिया पर लोग मुझे ताने देते हैं, जब भी घर आओ, रंगीन कपड़े पहना करो। माताजी की ऐसी दुविधापूर्ण स्थिति देख मैं कई दिन घर नहीं गई। बहुत बुलाने पर जब घर गई तो वे बोली, आप तो देवी हो, पूज्य हो। मैंने तो लोगों की बातों में आकर आपको ऐसा-वैसा कह दिया था और उनकी आंखें आंसुओं से भर आईं। बाद में हमारे घर के पास ही सेवाकेन्द्र खुला और माताजी, पिताजी, छोटी बहन भी सेवाकेन्द्र पर जाने लगे। लौकिक बहन ने भी बाबा को पहचान कर अपना जीवन सेवा में समर्पित कर दिया। पिछले 35 वर्षों से वो भी (लक्ष्मी बहन) अहमदाबाद में (अमराईवाड़ी) सेवाकेन्द्र संभाल रही हैं।

आपस में झगड़ना नहीं

सेवाकेन्द्र पर रहते हुए मुझे सेवाएँ करने का अनुभव मिलता रहा। कुछ समय बाद दूसरी बार बाबा से मिलने मधुबन जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस बीच भी बाबा से फोन तथा पत्रों द्वारा मिलना होता रहा। बाबा सुबह 6.15 पर क्लास में आते थे। उससे पहले हम तैयार होकर बाबा से गुडमार्निंग करने जाते थे। एक दिन सुबह गुडमार्निंग करके मैं बाबा से दृष्टि ले रही थी तो बाबा ने मुझे अपने पास बिठाया और पूछा, बच्ची, सेवाकेन्द्र पर अच्छा लगता है ना। सभी मिलजुलकर रहती हो ना? मैंने कहा, जी बाबा। फिर बाबा ने पूछा, बच्ची आप जो साथ में रहती हो, कभी आपस में लड़ती-झगड़ती तो नहीं हो? मैंने कहा, नहीं बाबा, हम सभी आपस में प्यार से रहते हैं और सेवा करते हैं। बाबा ने कहा, बच्ची, कभी आपस में लड़ना-झगड़ना नहीं क्योंकि बाबा के पास एक बच्ची है, बाबा उसको जिस भी सेवाकेन्द्र पर भेजता है, सभी से लड़-झगड़ कर वापिस बाबा के पास आ जाती है। बच्ची, तुम्हें मालूम है वो सतयुग में क्या बनेगी? बाबा ने कहा, वो दासियों की दासी बनेगी। बच्ची, आपको तो सेवा करके बाबा का नाम बाला करना है।

जल्दी जाओ, जल्दी आओ

उसी समय लच्छू दादी दो प्रकार की टोली लेकर के आई और बाबा से पूछने लगी, बाबा आज क्लास में कौन-सी टोली देनी है? बाबा मुझसे पूछने लगे, बच्ची, बताओ आज कौन-सी टोली दें? बाबा खुद अथॉरिटी थे पर बच्चों का उमंग-उत्साह बढ़ाते उन्हें आगे रखते थे। मैंने इशारा कर कहा, ये टोली देंगे। बाद में हम क्लास में गये। बाबा की मुरली सुनने लगे। मैं काफी दूर बैठी थी, बाबा ने मुझे इशारे से नजदीक बुलाकर अपने सामने बिठाया और क्लास के बाद टोली बांटने की सेवा करवाई। सेवाकेन्द्र पर जाने के एक दिन पहले बाबा ने मुझे अपने साथ झूले में बिठाकर झूला झुलाया और पूछा, बच्ची, किसके साथ झूला झूल रही हो? मैंने कहा, बापदादा के साथ। इस तरह झूला झूलते, मिलन मनाते एक सप्ताह कब बीत गया मालूम नहीं चला। वापिस आते समय बाबा ने जल्दी जाओ, जल्दी आओ (Go soon, Come soon) की टोली देते हुए कहा, बच्ची, तुम्हें तो देश-विदेश में सेवा कर बाबा का नाम बाला करना है।

अव्यक्त होते भी
बाबा सदा साथ हैं

मुझे यह मालूम नहीं था कि बाबा के साथ यह अन्तिम मुलाकात है। बाबा के शरीर छोड़ने के बाद ऐसा महसूस होने लगा कि अब मधुबन में मैं किससे मिलने जाऊँगी। मुझे बाबा जैसा सानिध्य अब किससे प्राप्त होगा? पर जब मधुबन गई तो पाण्डव भवन के दरवाजे पर पांव रखते ही देखा जैसे बाबा सामने खड़े हैं और कह रहे हैं, बच्ची आ गई। ऐसा कह कर बाबा अदृश्य हो गये। तब महसूस किया कि अव्यक्त होने के बाद भी बाबा सदा हमारे साथ हैं। फिर तो अपना हाथ और साथ देकर अनेक स्थानों पर बाबा ने सेवा करवाई। विदेशों में भी दुबई, सिंगापुर, इन्डोनेशिया, अफ्रीका (नैरोबी, कम्पाला, दारूसलम) में सेवाओं का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बस एक ही संकल्प है कि शरीर के अंतिम श्वास तक बाबा की सेवा करती रहूँ। सेवा करते-करते ही बाबा की गोद में समा जाऊँ। बाबा का लाख-लाख शुक्रिया कि जीवन धन्य बना दिया। इसलिए दिल गाता है, ''किन शब्दों में आपका धन्यवाद करूँ।'' ❖